International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी के विविध रूप

जे.कृष्णवेणी, शोधविद्यार्थिनी,नागार्जुन विश्वविद्यालय,गुण्टूर
श्री के.कृष्णा, विभागाधिपति, हिन्दी विभागए नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर

Date of Submission: 02-04-2023 Date of Acceptance: 12-04-2023

रूपरेखाः

1.प्रस्तावना
2.भारत में नारी का स्थान
3.भारत के समकालीन महिला कहानिकारों में परवेज का स्थान
4.मेहरून्निसा परवेज का व्यक्तित्व और कृतित्व
5.परवेज की कहानियों का परिचय
6.परवेज की कहानियों में चित्रित नारी व्यथा
7.परवेज की कहानियों में नारी–संघर्श–चेतना की अभिव्यक्ति
8.उपसंहार

''''''''

भारत में नारी का स्थान

भारतीय समाज में प्रारंभ से ही नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । वह दैवी तथा पूज्या है । मनु के शब्दों में, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता' अर्थात् जहॉ नारी का सम्मान होता है, वहॉ देवता निवास करती हैं । नारी समाज का निर्माता है । भारत में प्राचीन वैदिक काल में स्त्री को पुरूश के ही समान अधिकार प्राप्त थे । वह अपने इन अधिकारों का उपभोग भारत में मुस्लिम षासन के स्थापित होने से पूर्व तक करती रही । पर मुस्लिम षासन काल में, नारी का व्यक्तित्व घर की चार दीवारी तक सीमित हो गया । ब्रिटीष षासन काल में भी नारी पराधीन की स्थिति में रही । तब से लगातार उसकी स्थिति दिन–प्रतिदिन खराब होती चली आयी । पुरूश के मन में स्त्री के प्रति हीनता की भावना दिन–ब–दिन बढती गयी । फलतः स्त्री के प्रति उत्पीडन आजीवन चलनेवाली एक सामाजिक रीति बन चुकी है । पहले–पहल वह बाल–विवाह, विधवा विवाह निशेध, षिक्षा से वंचित, विधवाओं का अभिषप्त जीवन, परदा प्रथा आदि समस्याओं से पीडित थी । स्वातंत्र आने के बाद कुछ समाज सुधारकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप स्त्री षिक्षा, बाल–विवाह नियंत्रण, विधवा पुर्नविवाह आदि समस्याएँ कुछ हद तक दूर हो गयी । पर उसके प्रति हीनता की भावना पर स्वतंत्रता के पष्चात नारी से संबंधित सामाजिक सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियॉ परिवर्तित होती गयी । पर उसके प्रति हीनता की भावना और भी बढ गयी । वह हर दिन जिन्दगी और मौत के बीच में जूझ रही है । वह पुरूश के लिए एक खिलौना समझा जाने लगा । उसे अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं हैं । दहेजप्रथा, वेष्यावृत्ति, मानसिक षोशण, बलात्कार, भाई–बन्धुओं से षोशण, अनमेल–विवाह आदि समस्याओं से वह पीडित हैं ।

भारत के समकालीन महिला कहानिकारों में परवेज का स्थान

साहित्य समाज का दर्पण होता है । याने जैसा समाज रहता है वैसा साहित्य । साहित्यकार समाज में रहता है । समाज में वे जो अनुभव करता है, या देखता है । उन्हें अपने साहित्य में प्रतिबिंबित करता है । समाज के विकास के साथ–साथ साहित्य में भी विकास होता रहता है । साहित्यकार सामाजिक यथार्थ के समर्थक होते हैं । समाज में होनेवाली घटनाओं के पता तत्कालीन साहित्य के द्वारा ही चलता है । आधुनिक काल के समाज की अनेक विकृतियों में जातीय संघर्श और वर्णव्यवस्था जैसी सामाजिक कुरीतियॉ मौजूद हैं । समाज में अग्रवर्ण आधिपत्य चलाते थे । अस्पृष्यता का भयंकर रोग भी समाज में था । साठोत्तरी कथाकारों ने इन समस्याओं पर साहित्य लिखा करते थे । इसी समय में समाज में और एक भयंकर समस्या भी थी वह भी 'नारी उत्पीडन' या नारी षोशण । इसी समय साठोत्तर कथा जगत में अनेक महिला कथाकारों का उदय हुआ है, जिन्होंनं देष में व्याप्त निम्न वर्ग की षोशित–सामाजिक व्यवस्था और निम्न मध्यवर्गीय नारियों की दर्द भरी वाणी एवं पुकार को पहचान लिया, और वे स्वयं अनुभव किये दुख दर्दों को आधार बनाकर उन्होंने साहित्य लिखे और अपने कथा साहित्य के द्वारा उन परिस्थितियों को बदलना भी चाहा । इनमें कृश्ण सोबती, , मन्नूभडारी, उशा प्रियंवदा, मेहरून्निसा परवेज, कृश्णसोबती, निरूपमा सोबती, षषिप्रभा षास्त्री, कृश्ण सोबती, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सूर्यबाला, मृणाल पांडे, कृश्णा अग्निहोत्री, नासिरा षर्मा, चित्रा मुद्गल आदि उल्लेखनीय है । जीवन की हर परिस्थिति से गुजरने के पष्चात उन परिस्थितियों से अनुभूत क्षणों को स्मृति में संजोकर उन्हें अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त करने में ये लेखिकाएँ बहुत हद तक सफल हुई है । सामाजिक विसंगतियों, कुरीतियों और आधुनिकता के मोहपाष में पडे

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

मानव की रूग्ण मानसिकताओं का जीवन्त चित्रण इनके कथा साहित्य में मिलता है ।

मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना की कथा लेखिका श्रीमती मेहरून्निसा परवेज इन महिला कथाकारों में अग्रगण्य है । उन्होंने बडी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है, मेहरून्निसा परवेज अपने लेखन के परिवेष को व्यक्त करते हुए कहती है कि '.....पुरानी मान्यताओं और गॉधीवादी विचारधारा को ताक पर दिये बैठी है । वातावरण में एक अजीब–सी भयावहता और दिग्भ्रमित आतंक फैला हुआ है । बेईमानी, घूसखोरी, भ्रश्टाचार और भाई–भतीजावाद की जहर लोगों के खून में मिल गया है ।' ऐसी स्थितियों में तत्कालीन नारी षोशणा की परिस्थितियों से प्रभावित होकर वह अपनी लेखन षुरू किया है । उन्होंने कहानी, उपन्यास, लेख एवं संस्मरण तथा अन्य विधाओं के श्रृजन के साथ 'समरलोक' पत्रिका का संपादन भी करती रहती है ।

मेहरून्निसा परवेज का व्यक्तित्व और कृतित्व :

साहित्यकार समाज में रहता हैं । अपनी लेखकीय प्रतिभाएँ समाज को देखकर ही विकसित होते हैं । जीवनानुभवों का अंष उनके रचनाओं में करी उतरता है । अतः साहित्यकार के जीवन को उनके रचनाओं से बाहर निकालकर नहीं देखा जा सकता है । मेहरून्निसा परवेज की लेखनी के आंतरिक मर्म को पहचानने के पहले उनके जन्म एवं जीवनगत परिवेष समझना जरूरी है, क्योंकि तब ही उनके व्यक्तित्व से प्रभावित कृतित्व को अच्छे ढंग से पहचान सकते हैं ।

मेहरून्निसा परवेज का जन्म 10 दिसंबर, सन् 1944 को मध्यप्रदेष में एक चलती बैलगाडी में हुआ । इतिहास प्रसिद्व नूरजहॉ का जन्म भी इसी प्रकार हुआ । जन्म घटनाओं की विषेशता एवं समानता के कारण मौलाना साहब ने उसे मेहरून्निसा नाम रखा था । घर के आसपास के लोग नदियॉ नाम से पुकारते थे । श्रीमती मेहरून्निसा परवेज जी सुसंस्कृत परिवार की धनी लडकी थी । उनकी माता षाहजादी बेगम मुगल घराने की थी और पिता अब्दुल हमीरखान डिप्टी कलेक्टर थे । अरबी, उर्दू और हिन्दी भाशाओं के प्रति रूची अपने मॉ से ही मिली । और साहित्य लेखन क रूचि अपने पिता से ही मिली । वह अपने पिता से ही प्रभावित हुई। । अपने पिता के पास कई पुस्तकें रहते थे । अपनी प्रगतिषील विचार धाराओं के कारण पिता ने पर्दा प्रथा और धार्मिक कट्टरपन का विरोध किया । पिता का रहन–सहन और आचरण व्यवहार पाष्चत्य सभ्यता से प्रभावित था । इसलिए सामंतवादी मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी नदिया ने धार्मिक बाह्याडंबरों को प्रधानता नहीं दी । उनके छोटे भाई अब्दुल रहीम खान है, जो उच्च षिक्षा पाकर मध्यप्रदेष में सरकारी अफसर है ।

मेहरून्निसा परवेज अधिक पढी–लिखी नहीं थी, लेकिन अनुभव संसार उनका षैक्षिक केन्द्र था । जीवन के अनुभवी की डिग्रिया साहित्य श्रृजन का आधार बन गयी । अपनी अधूरी षिक्षा के बारे में उन्होंने कहा है कि 'मुझे इतनी तालीम मिली कि मैं अपनी साहित्य लिख सकती हूँ । और इतनी भी तालीम नहीं मिली कि मैं अपनी जिन्दगी के लिए नौकरी कर सकती हूँ ।' बचपन में व्याकरणिक षिक्षा उनके लिए कठिन अवष्य था, किन्तु उन्होंने रट्टू तोते की तरह उन्हें कंठस्थ कर लिया था जिसने उसके जीवन को अनुषासन का पाठ सिखाया । बचपन में बात–बात पर रोनेवाला मन अब बडे तूफाान को भी किसी खूबी से झेला जाता है । मेहरून्निसा परवेज का विवाह पन्द्रह वर्श की आयु में अपने से पन्द्रह–बीस बडे उम्रवाले रउफ परवेज के साथ हुआ था, जिनके साथ उनका दॉपत्य जीवन निराषा जनक था । ससुराल वाले कट्टर मुसलमान परिवार होने के कारण उन्हें धार्मिक अंधविष्वासों मे जकडना चाहते थे । विवाह पष्चात दस साल तक बांझपन की विभीशण समस्या को भोगना पडा । बाद एक पुत्र भी पैदा हुआ । पर पति से अलग होना ही पडा, मातृत्व की पवित्र भावना से भी उसे वंचित होना पडा ।

परवेज ने फिर सन् 1979 में आई.ए.एस.अफसर डा.भगीरथ प्रसाद मिश्र से दूसरा विवाह किया । वे भी तलाक षुदा थे । अंतर्जातीय विवाह की सारी समस्याओं को उन्हें वहॉ झेलना पडा । आप सभी धर्मों पर आस्था रखती है । स्त्री को उन्होंने दुर्गा, लक्ष्मी का रूप दिया है । वे हिन्दू देवी देवताओं का नमन भी करती है । परवेज सौम्यषील, परोपकारी एवं अपनत्व से व्यवहार करनेवाली नारी है । उसे दूसरों को खिलाने में बडा आनंद आता है । और वह प्रकृति प्रेमी होने के कारण उनकी रचनाओं में प्रकृति के माध्यम से परिवर्तन लाने की सजगता अधिक दिखाई पडती है । स्वतंत्रयोत्तर युग की महिला लेखिकाओं ने नारी जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन करने का सफल प्रयास किया है । ये लेखिकाएँ स्त्री जीवन की सच्चाई तक पहुँचती हैं और उसकी पीडा से साक्षात्कार करते हुए भोगे हयु यथार्थ और उससे उपजी व्यथा से मुक्ति का प्रभावी प्रयत्न करती है । मेहरून्निसा परवेज ने भी विविधोन्मुखी आधुनिक नारी जीवन के यथार्थ को अपने कथा साहित्य में प्रभावी ढंग से रूपायित किया है ।

भारतीय समाज में सबसे अधिक पीडित, प्रताडित एवं बन्धन ग्रस्त जीव नारी है । 'हमारी समाज में नारी अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहती है । समाज में एक ओर पुरूशों को स्वच्छन्द जीवन भोगने के लिए अनेक सामाजिक सुविधाएँ उपलब्ध रही हैं, दूसरी तरफ नारी घर की चहार दीवारों में बन्द होकर पुरूशों के हाथ की कठपुतली बनी रही है । पुरूश केन्द्रित समाज तथा परिवार में नारी को हीन समझकर उसे समानाधिकारों से वंचित रखा गया । फलतः वह हीन भावना ग्रस्त होकर

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

आजीवन सामाजिक अत्याचार मौन रूप से सहती रहती है । आज षोशित या पीडित नारियॉ सर्वत्र उपलब्ध है । पुरूश की नजर में स्त्री मात्र एक षरीर है, वासना पूर्ति का एक साधन है । मुक्त बाजार में ही स्त्री का षोशण हो रहा है । स्त्री पर बचपन से ही अनेक प्रतिबन्ध लाद दिये गये हैं । विवाह पष्चात पति से भी उस पर बंधन होता है । **' वह निरपराद ही निष्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ऐसा कोई भी नारी जीवित नहीं होगी, जिसने अपने पीडा की मुक्ति के लिए कम से कम एक बार आत्महत्या के बारे में सोचा न होगा।'** कहने का आषय है कि नारी सदा षोशण की चक्र में पिसती रही है, महिला लेखिका परवेज ने अपने कथा साहित्य में ऐसी ही षोशित व पीडित नारियों और उनकी समस्याओं का खुला चित्रण किया है ।

आपकी पहली कहानी जंगली हिरनी धर्मयुग पत्रिका सन् 1963 अक्तूबर में प्रकाषित हुई । तब से श्रीमती परवेज निरन्तर कहानियॉ एवं उपन्यास लिखती रही हैं । आपके प्रमुख कहानी संग्रह हैं :आपके पहली कहानी संग्रह 'आदम और हव्वा' सन् 1972 में प्रकाषित हुआ । इसमें कुल उन्नीस कहानियॉ हैं । दूसरी 'टहनियों पर धूप' सन् 1977 में प्रकाषित हुआ । इसमें कुल बारह कहानियॉ है । 'गलत पुरूश' – यह तीसरा कहानी संग्रह है। इसमें कुल सोलह कहानियॉ हैं । 'फालगुनी' संग्रह सन् 1978 में प्रकाषित हुआ था । इसमें कुल सात कहानियॉ हैं । 'अंतिम चढाई' –यह सन् 1982 में प्रकाषित हुआ था । इसमें कुल सात कहानियॉ हैं । 'एक और सैलाब' सन् 1990 में प्रकाषित हुआ । इसमें कुल बारह कहानियॉ हैं । सोने का बेसर सन् 1991 में प्रकाषित हुआ था । इसमें कुल 11 ग्यारह कहानियॉ है । अयोध्या से वापसी सन् 1991 में प्रकाषित हुआ है । इसमें पंद्रह कहानियॉ है । 'रिष्ते' सन् 1992 में प्रकाषित हुआ है । इसमें इक्कीस कहानियॉ हैं । 'ढहता कुतुबमीनार' सन् 1993 में प्रकाषित हुआ था । इसमें तेरह कहानियॉ हैं । 'अम्मा' सन् 1997 में प्रकाषित हुआ था । इसमें नौ कहानियॉ है । 'समर' सन् 1999 में प्रकाषित हुआ था । इसमें छः कहानियॉ है ।आपके प्रमुख उपन्यास है – 1.ऑखों की दहलीज 2.उसका घर 3.कोरजा 4. अकेला पलष 5.समरांगण 6. प्रासंग । रमजान की ईद, कुत्तों का ट्रैनिंग कालेज, मासूम ऑखों के सवाल, आर्थिक–सामाजिक, नैतिक घुटन, बस्तर मंडई, बॉछडा – रोषनी की पहली दस्तक, नागफनी का नन्दन कानन आदि आपके लेख और संस्मरण है । श्रीमती मेहरून्निसा परवेज पिछले चार दषकों से साहित्य सेवा में कार्यरत है । विभिन्न पत्रिकाओं में आपकी कहानियॉ प्रकाषित हुए हैं उनमें कोई नहीं, बडे लोग, जूठन और लाल गुलाब आदि ।

परवेज की कहानियों में चित्रित नारी व्यथा

मेहरून्निसा परवेज बचपन से ही लेखन कार्य में सक्रिय रही है । उनकी साहित्यिक यात्रा बस्तर से ही षुरू हुई थी । मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की समस्याऍ, षोशित एवं पीडित नारी की दुर्दषा, आर्थिक सामाजिक समस्याऍ, प्रेम के बदलते दृश्टिकोण आदि उनके कथा साहित्य के विशय रहे हैं । उनकी कहानियॉ जीवन की कटु सच्चाइयों से जूझती हुई भयावह से साक्षात्कार कराती है ।

श्रीमती मेहरून्निसा परवेज की कहानियॉ नारी पात्र प्रधान है । उसने विवाह के संबंध में अनेक बदलते दृश्टिकोणों को अपने कहानियों में स्पश्ट किया है । विवाह पूर्व और विवाह के बाद नारी जिस प्रकार समस्याओं को सामना करती हैं, उन समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रण किया हैं । व्यक्तित्व का अभाव, आर्थिक परतन्त्रतता, सामाजिक षोशण, दहेज प्रथा, परदा प्रथा, वेष्यावृत्ति, बाल–विवाह, बांझपन का बोझ, अनमेल विवाह विधवा जीवन के लिए बाध्य, मानसिक षोशण, लैंगिक षोशण, अनब्याही नारी की समस्या, प्रेमी द्वारा छली जाना, काम–काजी युवती का विवाह न होना आदि कुछ ऐसी समस्यायें है जिनका सामना पूरी दुनिया की स्त्रीयों को करना पड रहा हैं । ऐसी ही समस्याओं को लेकर परवेज ने अपनी कहानियों को लिखी । जमाना बदल गया, भोगे हुए दिन और अपनी जमीन कहानियों में समाज में बेटे को जितना प्रधानता दिया जाता है और बेटियों को जितनी हीन दृश्टि से देखते हैं – इस समस्या को वर्णन किया है । आज समाज में बेटी को बोझ समझी जा रही है– इस समस्या को 'सूकी बयडी' कहानी में वर्णन किया है । लडकी का विवाह देर होने से लडकी और उसके मॉ–बाप को सगे संबंधियों से ताने सुनने पडते है । 'जाने कब' कहानी इस समस्या संकेत है । अगर लडकियॉ सुन्दर और गुणी हो तो गरीब होते हुए भी कही न कही रिष्ता हो ही जाता है । अगर ऐसा न हुआ तो लडका ढूँढना मुष्किल हो जायेगा । इस समस्या को 'बडे लोग' कहानी में वर्णन किया है । दहेज प्रथा के कारण लडकियॉ घरवालों पर बोझ बनने लगी है । लडकी के जन्म से ही मॉ–बाप इस चिंता में डूब रहते हैं । अन्य अनेक समस्याओं की उत्पत्ती भी यही से होती हैं । विवाह के बाद, जिन्दगी भर के लिए मॉ–बाप कर्ज में डूब रहते हैं । 'सकी बयडी' कहानी इस समस्या पर है । विवाह पष्चात जब लडकी बहु बनकर ससुराल में आती है तब मानों उस घर का सारा काम उसी का इन्तजार में हैं । कदम रखते ही घर की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ जाती है । अगर वह कामकाजी स्त्री है तो उसे दुहरी जिम्मेदारी निभानी पडती है । बीमार पडने पर भी उसे काम करना पडता है । इस समस्या को 'अपने–अपने लोग' कहानी में वर्णित है । विवाहित महिला ससुराल छोडकर मायके आकर रहना ठीक नहीं माना जाता है । हमारी पुरानी

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 3, Issue 2, Mar.-Apr. 2023, pp: 812-815 www.ijhssm.org

रीतियों के अनुसार अगर एक बार बेटी घर से डोली में बिदा होकर जाती है तो उसे वापस अर्थी पर ही ससुरा छोडना चाहिए वहॉ के कश्टों और दुखों को सहना उसका नसीब माना जाता है । इसी समस्या को 'अम्मा' कहानी में विष्लेशण है । हमारे समाज की नारी को बांझपन एक अभिषाप प्रतीत होता है । यह माना जाता है कि नारी अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त करती है जब वह मौं का दर्जा हासिल कर लेती है । बच्चों से ही उसे समाज और परिवार में प्रतिश्टा हासिल होती है । इसी समस्या को कहानी में वर्णन किया है । दहेज न दे सकने के कारण माता–पिता बेटी को किसी तरह षादी करके हाथ धोना चाहते हैं । उस समय वे उम्र में काफी बडे व्यक्ति से उसका विवाह करा देते हैं । इससे दाम्पत्य जीवन संतुश्ट नहीं हो पाता है । 'नंगी ऑखोंवाला रेगिस्तान' कहानी में इस समस्या को वर्णन किया है । हमारे समाज में पति के देहान्त के बाद पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं है । उसका सजना संवारना और षुभ कार्यों में षामिल होना सिर्फ पति के जीवित रहने तक ही सीमित है । 'वीराने' कहानी में इस समस्या को चित्रण किया है । पुरूश की निगाह में औरत सिर्फ वासना को तृप्त करने का साधन है तो ससुराल के अन्य सदस्यों के लिए वह नौकरानी है । 'पत्थर वाली गली' कहानी में इस समस्या का वर्णित है ।

मध्यप्रदेष के रत्लाम से नीमच तक एक सौ पचास किलोमीटर के राज्यमार्ग में बॉछडा जाति के लोग रहते हैं । ये अपने परिवार की लडकियों से वेष्यवृत्ति करवाते हैं । ये लोग मन्दसौर, नीमच रत्लाम, इन्दौर, उज्जैन, राजपुर जिले में रहते हैं । वे मूलतः मन्दसौर जिले के निवासी थे जो पहले ग्वालियर राज्य में रहते थे । यहॉ के पुरूश आलसी और स्वप्न विलासी है । रीति के अनुसार घर की बडी बेटी को धंधे पर बिठाया जाता है लेकिन अब स्वार्थवष घरवाले छोटी उम्र की लडकियों को भी इस व्यापार में लगा देते हैं । इन लडकियों को 'खेलवाडी' कहते हैं, जिसका अर्थ है जिससे खेला जाय' । रीतिरिवाज और देवी के नाम पर अनेक लडकियों को यौन षोशण होता है । जवान होते–होते किसी लैंगिक बीमारी के कारण इनका देहान्त हो जाता है । मेहरून्निासा परवेज ने इन लडकियों की स्थिति को अपने कहानियों में उजागर किया है जिसका विष्लेशण 'ओढना, खेलावडी, जूठन, और जुगुनू इस समस्या को वर्णन किया है ।

परवेज की कहानियों में नारी–संघर्श–चेतना की अभिव्यक्ति

परिवारिक समस्याओं से जूझकर अपना अस्तित्व कायम रखनेवाली नारी चेतना उनकी रचनाओं की सबसे बडी विषेशता है । महेन्द्र रघुवंषी के अनुसार 'मेहरून्निसा परवेज की नारियॉ समय आने पर पति को भी त्याग सकती है । समाज की परंपराओं को तोड सकती हैं । पति और परिवार से विद्रोह करती हैं । क्योंकि अब हमारे समाज में नारियों ने जीवन का असली रूप देख लिया है, अब वह पुरूश पर आश्रित नहीं है । उसने जीने की राह ढूँढ ली है। जो अपना सब कुछ समर्पित कर देती है, उसे ही बेघर कर दिया जाता है, इसलिए वह चाहती है कि, उसका अपना स्वतंत्र घर हो ।

देहरी की खातिर, कोई नहीं, ओढना, उसका घर, जूठन कहानियों में स्त्री का विद्रोह रूप दिखाई पडती है । नारी की उन्नति के लिए षिक्षा महत्वपूर्ण सूचक है । आर्थिक बल और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए यह एक हथियार है । वह पति या पिता के अभाव में घर का संचालन करती है । उसमें आत्मविष्वास पैदा होता है । 'अम्मा', 'ढहता कुतुब मीनार' इसी आदर्ष को वर्णन किया है ।

आषय यह है कि आज स्त्री को स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व है इसलिए वह पुरूश सत्ता को नकारती है, फिर भी षोशण की परम्परा कायम रही है । नारीगत समस्याओं और षोशण के लिए उत्तरदायी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ही है. जिसका विस्तृत विवेचन मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में उपलब्ध है ।

उपसंहारः

मेहरून्निसा परवेज ने अपने कहानियों में नारी जीवन में आये अनेक मोडों को, जीवन के यथार्थ पहलुओं से जोडकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अपनी कहानियों में उन्होंने निम्न वर्ग, मध्यवर्ग के नारी पात्रों का चयन किया है । नारी के षोशण, बदलते परिवेष के साथ उसकी नयी समस्याओं, उसके विभिन्न परंपरागत रूप :: बहन, प्रेमिका, पत्नी और मॉ :: , नयी पीढी की बदलती हुई आकांक्षाओं के अनुरूप नारी का संघर्शात्मक एवं विद्रोही स्वरूप, उसके आक्रोष और अधिकारों के प्रति सजगता को उन्होंने वाणी दी है ।

नारी के व्यक्तित्व, अस्तित्व, उसके स्वतंत्र, विचार, उसकी पीडा आदि को मेहरून्निसा परवेज ने अपने कहानियों में प्रतिबिंबित किया है । स्त्रीयों की व्यक्तिगत, परिवेषगत, मानसिक एवं षारीरिक समस्याओं को उन्होंने व्यापक अभिव्यक्ति दी है । ऐसी नारी पात्रों का वर्णन है जो परंपरागत होते हुए भी परम्परागत नहीं है । आधुनिकता और परंपरा के बीच आज नारी जूझ रही है और मेहरून्निसा परवेज के नारी पात्र इन सबसे बाहर निकलने की राह ढूँढ रही है ।

,,,,,,,,,,,,,,,